International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 5 May-June 2024

बेगूसराय जनपद में लिंगानुपात एवं साक्षरता में सह-संबंध का भौगोलिक अध्ययन।

पप्पु कुमार[1], डॉ.अनुरंजन[2]

[1]शोध छात्र, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

[2]एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

Corresponding Author - पप्पु कुमार
Email: pappu6819@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.12754355

सारांश:

लिंगानुपात का घटता स्तर वर्तमान समय में प्रदेश के सामाजिक विकास के लिए एक बड़ी समस्या उत्पन्न कर रही है। किसी भी क्षेत्र के जनसंख्या के सामान्य स्तर को बनाये रखने के लिए जनसंख्या में पुरूष एवं महिलाओं की संख्या का बराबर होना आवश्यक है। बेगूसराय जनपद में लिंगानुपता का गिरता स्तर यहाँ की जनसंख्या के लिए एक गंभीर समस्या हो गई है। लिंगानुपात के गिरते स्तर के कई करण है परन्तु इसमें साक्षरता भी एक महत्वपूर्ण कारण है। पढ़े-लिखे एवं साक्षर लोगों का मानना है, कि 'छोटा परिवार सुखी परिवार' होता है। वर्तमान समय में बेगूसराय जनपद में इस विचार धारा के कारण जिस परिवार में पहला संतान लड़का होता है उस परिवार में सामान्यतः दूसरे बच्चों का जन्म नहीं होता है। इसके अलावे विभिन्न प्रकार के मेडिकल सुविधाओं का भी प्रयोग कर लोग परिवार में लड़कों - लड़कियों की जनसंख्या का निर्धारण करते है। स्त्री-पुरूषों के अनुपात में विषमता से कई सामाजिक समस्याएँ जैसे-वेश्या-गमन, बलात्कार, व्यभिचार इत्यादि उत्पन्न हो जाती है। ये समाज के लिए कलंक है, जिनसे मनुष्य का नैतिक, सामाजिक और शारीरिक अघःपतन हो जाता है।

मुख्य शब्द: लिंगानुपात, साक्षरता, सह-संबंध, परिवार, नैतिक व सामाजिक मापदण्ड, परिवर्तनशील, प्रवास, समानता।

प्रस्तावना:

किसी क्षेत्र की जनंसख्या में स्त्रियों एवं पुरूषों का अनुपात, लिंगानुपात या यौन अनुपात कहलाता है दूसरे शब्दों में प्रति 1,000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात कहते है। लिंगानुपात किसी दिए गए समय में समाज के पुरूषों एवं महिलाओं के बीच समानता की सीमा मापने के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है। किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था एवं समाज के विकास में लिंगानुपात की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण जनसंख्या भूगोल में इसका अध्ययन अपरिहार्य होता है। क्षेत्रीय आधार पर लिंगानुपात में पायी जानेवाली विभिन्नता, सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं पर अत्यधिक प्रभाव डालती है। साक्षरता जनसंख्या का एक ऐसा सामाजिक पक्ष है, जिसके आधार पर सामाजिक विकास का मापदण्ड निश्चित किया जा सकता है। तथापि जनंसख्या भूगोल विदों के लिए साक्षरता जनसंख्या का एक सामाजिक पक्ष होने के साथ-साथ गुणात्मक तथ्य भी है, जो प्रादेशिक आधार पर परिवर्तनशील सामाजिक आर्थिक प्रवृतियों की ओर अप्रत्यक्ष रूप से संकेत करता है। अतः साक्षरता के विकास से मनुष्य सीमित परिवेश से बाहर निकल कर अपने क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रवृतियों से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध स्थापित कर लेता है साक्षरता का लिंगानुपात पर सकारात्म एवं ऋणात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है। जहाँ एक साक्षर व्यक्ति लड़का एवं लड़की में भेद-भाव नहीं करता है वहीं कभी-कभी पढ़े लिखे लोग छोटे परिवार की सोच के कारण लिंगानुपात में वृद्धि का कारण बन जाते है। इस लिए वर्तमान समय में समाज में लिंगानुपात के स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता है।

शोध का क्षेत्र:

बेगूसराय जनपद गंगा के मध्य मैदान के अंतर्गत उत्तरी बिहार मैदान का एक महत्वपूर्ण अंग है। 25^0 14' 12'' उत्तरी अक्षांश से 25^0 45' 55'' उत्तरी अक्षांश तथा 85^0 44' 34'' पूर्वी देशान्तर से 86^0 30' 51'' पूर्वी देशान्तर के मध्य 1918 वर्ग किलोमीटर में अवस्थित बेगूसराय जनपद के उत्तर में समस्तीपुर जनपद, दक्षिण में पटना जनपद, लक्खीसराय जनपद व गंगा नदी, पूरब में खगड़िया एवं मुंगेर जनपद व गंगा नदी तथा पश्चिम में समस्तीपुर जनपद अवस्थित है। इसकी औसत ऊँचाई 45 मी॰ है जो पश्चिम से पूर्व दिशा में जाने पर घटती है। इस मैदान का ढ़ाल पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर है। अनुसंधान में ऐसा पाया गया है कि जहाँ पर वर्तमान समय में बेगूसराय जिला अवस्थित है वह

भूभाग मुख्यत: गंगा एवं बूढ़ी गंडक नदी के अवसादों द्वारा बनायी गई मैदानी भाग है। इस क्षेत्र में जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है, जो काफी उपजाऊ होती है। इस प्रदेश की कुल जनसंख्या 29,70,541 है। जिसमें पुरूष की जनसंख्या 15,67,660 एवं महिला की जनसंख्या 14,02,881 है।

शोध का मुख्य उद्देश्य:

1. बेगूसराय की जनसंख्या में लिंगानुपात की स्थिति का अध्ययन करना।
2. बेगूसराय की जनसंख्या में साक्षरता दर का अध्ययन करना।
3. लिंगानुता एवं साक्षरता दर के बीच सह संबंध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना:

1. बेगूसराय जनपद में लिंगानुपात का स्तर कम है।
2. बेगूसराय जनपद में साक्षरता दर का स्तर निम्न है।
3. लिंगानुपात एवं साक्षरता दर में कोई सह - संबंध नहीं है।

बेगूसराय जनपद में लिंगानुपात:

किसी क्षेत्र की जनंसख्या में स्त्रियों एवं पुरूषों का अनुपात, लिंगानुपात या यौन अनुपात कहलाता है दूसरे प्रति 1,000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात कहते है। लिंगानुपात किसी दिए गए समय में समाज के पुरूषों एवं महिलाओं के बीच समानता की सीमा मापने के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है। किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था एवं समाज के विकास में लिंगानुपात की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण जनसंख्या भूगोल में इसका अध्ययन अपरिहार्य होता है। क्षेत्रीय आधार पर लिंगानुपात में पायी जानेवाली विभिन्नता, सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं पर अत्यधिक प्रभाव डालती है।

ट्रिवार्था के अनुसार, "किसी क्षेत्रा के भौगोलिक विश्लेषण के लिए स्त्री-पुरूष अनुपात मूलाधार है, क्योंकि यह भूदृश्य का एक महत्वपूर्ण लक्षण ही नहीं बल्कि यह अन्य जनांकिकीय तत्वों को भी महत्वपूर्ण रूप में प्रभावित करता है।"

किसी जाति विशेष की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के साथ क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण और जनांकिकी तत्वों के प्रभाव को समझने में भी लिंगानुपात से सहायता मिलती है।

हालांकि लिंगानुपात गणना एवं व्यक्त करने की विधियाँ संसार के विभिन्न देशों में भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु भारत में यह प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में व्यक्त की जाती है। इसका परिकलन निम्नांकित सूत्र के द्वारा किया जाता है।

$$\text{लिंगानुपात} = \frac{\text{स्त्रियों की संख्या}}{\text{पुरूषों की संख्या}} \text{x} 1000$$

इस तरह शिशु लिंगानुपात, किसी क्षेत्र में 0-6 आयुवर्ग के शिशुओं में लड़की-लड़का के अनुपात का अध्ययन किया जाता है।लिंग अनुपात विवाह और बहु प्रजननता के माध्यम से श्रम पूर्ति को प्रभावित करता है। यह अनुपात कार्यशील व्यक्तियों की संख्या और आश्रितों की संख्या निर्धारित करता है। यदि पुरूषों का प्रतिशत स्त्रियों से अधिक हो तो सामान्यतः अधिक कार्यशील व्यक्ति उपलब्ध होगा। परन्तु स्त्री-पुरूषों के अनुपात में विषमता से कई सामाजिक समस्याएँ जैसे-वेश्या-गमन, बलात्कार, व्यभिचार इत्यादि उत्पन्न हो जाती है। ये समाज के लिए कलंक है, जिनसे मनुष्य का नैतिक, सामाजिक और शारीरिक अघःपतन हो जाता है।

तालिका – 1 बेगूसराय जनपद में प्रखंडवार लिंगानुपात की स्थिति, 2011

प्रखंड का नाम	कुल पुरूष	कुल महिला	लिंगानुपात
खुदाबन्दपुर	47074	43284	919
छौड़ाही	64686	59505	920
गढ़पूरा	58422	52686	902
चेरिया बरियापुर	76665	70015	913
भगवानपुर	91222	81454	993
मंसूरचक	41690	38820	931
बछवाड़ा	103183	92632	898
तेघड़ा	136113	121638	894
बरौनी	144697	128717	890
वीरपुर	51630	45837	888
बेगूसराय सदर	286621	253388	884
नावकोठी	53739	49618	923
बखरी	73403	66694	909
डंडारी	40526	36730	906
साहेबपुर कमाल	103675	90497	873
बलिया	96869	85309	881

मटिहानी	81287	71438	879
साम्हो अकहा कुरहा	16158	14619	905
कुल	**1567660**	**1402881**	**895**

Sources : Distric Census Handbook, Begusarai, 2001 & 2011

इस प्रकार तालिका संख्या - 1 के आधर पर 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद के प्रखंडों के लिंगानुपात को चार भागों में बांटा जा सकता है :

1. उच्च लिंगानुपात वाला क्षेत्र (915 से ऊपर) :

इसके अन्तर्गत जनपद के उत्तरी भाग में पड़नेवाले पाँच प्रखंड आते है, जिससें भगवानपुर (993), मंसूरचक (931), नावकोठी (923), छौड़ाही (920) एवं खुदाबन्दपुर (919) प्रखंड है। यहाँ अधिक लिंगानुपात का मुख्य कारण साक्षरता है तथा प्रायः ग्रामीण क्षेत्र है।

2. मध्यम लिंगानुपात वाला क्षेत्र (900 से 915) :

इसके अंतर्गत उत्तरी भाग में पड़नेवाले प्रखंड चेरिया बरियारपुर (913), बखरी (909) प्रखण्ड उत्तरी-पूर्वी भाग के डंडारी (906) प्रखण्ड तथा दक्षिणी भाग में साम्हो-अकहा-कुरहा (905) प्रखण्ड आते है।

3. निम्न लिंगानुपात वाला क्षेत्र (885 से 900) :

इसके अन्तर्गत जिले के उत्तरी भाग में गढ़पुरा (902) प्रखण्ड, मध्य व पश्चिमी भाग में पड़ने वाले प्रखंड बछवाड़ा (898), तेघड़ा (894), बरौनी (890) तथा वीरपुर (888) प्रखण्ड आते है। इसका कारण भ्रूण हत्या, निरक्षरता एवं बाल विवाह के अतिरिक्त बेटे के प्रति लोगों का ज्यादा झुकाव होना है।

4. अतिनिम्न लिंगानुपात वाला क्षेत्र (885 से नीचे) :

इसके अन्तर्गत जिले के दक्षिणी एवं मध्य भाग में पड़ने वाले प्रखण्डों में बेगूसराय सदर (884), बलिया (881), मटिहानी (879) एवं दक्षिण पूर्वी भाग में पड़ने वाले प्रखण्ड में साहेबपुर कमाल (873) प्रखंड आते हैं । इस क्षेत्र में अतिनिम्न लिंगानुपात का मुख्य कारण भ्रूण हत्या, असाक्षरता एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कन्या शिशु मृत्युदर का अधिक होना है। शहरी क्षेत्रों में एक लड़का वाले परिवार पर बल देना, बाल विवाह व घरेलू हिंसा भी इसका कारण है।

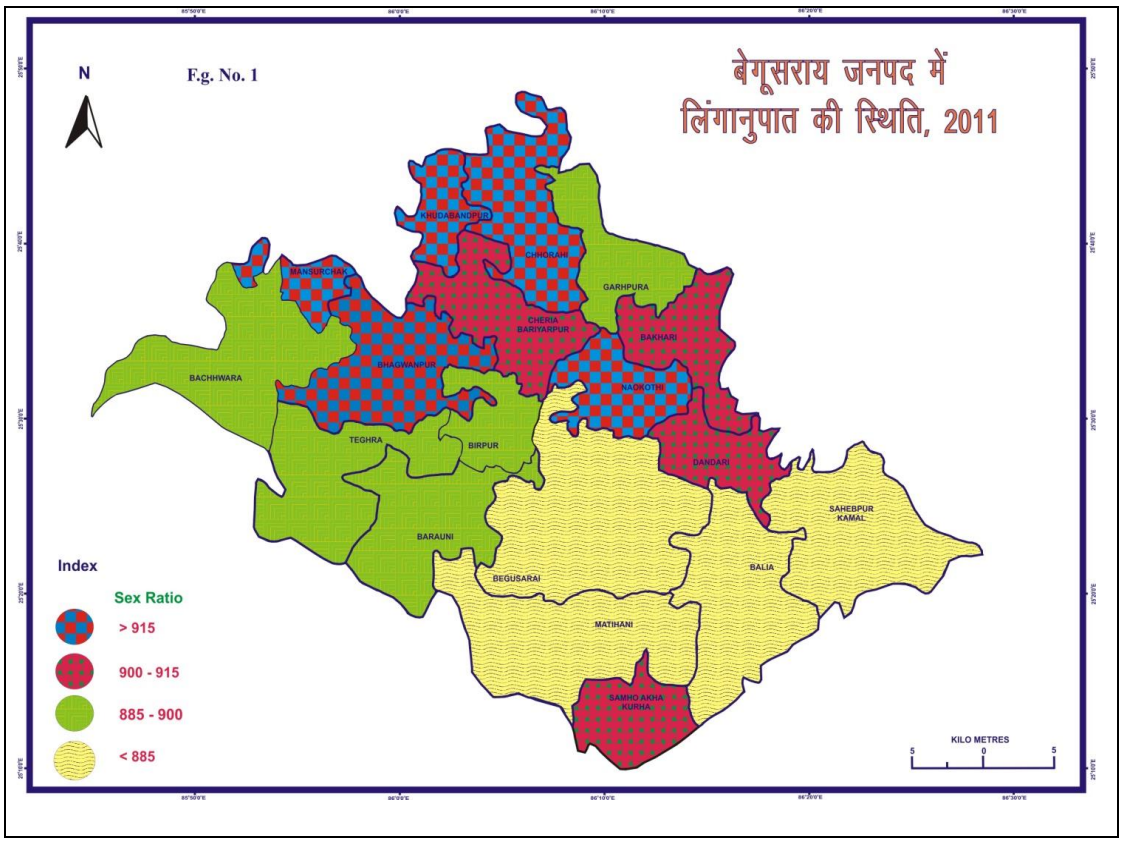

लिंगानुपात का कालिक विश्लेषण :

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि बेगूसराय जिले का लिंगानुपात घट रहा है। वर्त्तमान में यह जिला, बिहार के निम्न लिंगानुपात वाले जिलों में से एक है। 1901 से 2011 तक जिले के लिंगानुपात के अध्ययन से पता चलता है कि इस 110 वर्षों में जिले में सबसे अधिक लिंगानुपात 1911 में 1046 दर्ज किया गया एवं सबसे कम लिंगानुपात 2011 में 895 दर्ज किया गया। 1961 में 1023

लिंगानुपात के बाद जिले में जो ऋणात्मक लिंगानुपात का क्रम जारी हुआ वह अभी भी जारी है।

तालिका – 2 बेगूसराय जिले का लिंगानुपात, 1901-2011

जनगणना वर्ष	लिंगानुपात	दशकीय अन्तर
1901	1045	--------
1911	1046	+01
1921	1022	-24
1931	998	-24
1941	998	00
1951	1022	+24
1961	1023	+01
1971	940	-83
1981	940	00
1991	898	-42
2001	912	+14
2011	895	-17

Sources : Distric Census Handbook, Begusarai, 2011 pp. – 50

अगर इस ऋणात्मक वृद्धि दर को कम नहीं किया गया जो आगामी समय के इसका प्रभाव समाज एवं जिले के विकास के लिए सही नहीं होगा। जिले में लिंगानुपात में कमी का कारण साक्षरता की कमी, भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, लड़कों की अपेक्षा लड़कियों का शिशु मृत्युदर अधिक होना एवं पुरूषों को रोजगार की तलाश में शहर की ओर प्रवसन तथा स्त्रियों का अधिक संख्या में उत्प्रवास एवं अल्पायु में कन्या का विवाह होना इत्यादि है।

बेगूसराय जनपद में साक्षरता स्तरः

साक्षर व्यक्ति वह है जिसे अक्षर का ज्ञान हो, जो अक्षर के साथ-साथ शब्दों को समझता हो। तथापि सामान्य रूप से 'साक्षरता' शब्द का अभिप्राय साक्षर या पढ़े-लिखे होने के भाव से है। अलग-अलग देशों में साक्षरता के अर्थ, परिभाषा एवं उसे निर्धारण के मापक भिन्न-भिन्न है। सामानता के अभाव में जनसंख्या भूगोल में साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन करना अपेक्षाकृत कठिन हो जाता है। कुछ देशों में मौखिक वार्तालाप की योग्यता, लिखना और गणितीय तथ्यों को जानना ही साक्षरता का घोतक है, जबकि कुछ देशों में विद्यालय जाने की निश्चित अवधि को आधार माना जाता है। इसके विपरित अधिकांश देशों में देश-विदेश की भाषा में पढ़ने, लिखने एवं भाषा को बोलने वाले को ही साक्षर माना गया है। भारत में किसी भाषा में एक सरल सूचना को पढ़-लिख कर समझ पाने वाले व्यक्तियों को साक्षर के अन्तर्गत रखा जाता है।

तालिका – 3 बेगूसराय जनपद में प्रखंडवार साक्षरता दर प्रतिशत में, 2011

क्रम संख्या	प्रखण्ड का नाम	पुरूष	महिला	साक्षरता दर
1.	खुदाबन्दपुर	71.32	52.09	62.16
2.	छौड़ाही	73.01	53.51	63.70
3.	गढ़पूरा	65.15	45.49	55.83
4.	चेरिया बरियापुर	69.81	52.47	61.52
5.	भगवानपुर	74.43	56.88	66.19
6.	मंसूरचक	75.51	58.17	67.19
7.	बछवाड़ा	68.88	51.05	60.47
8.	तेघड़ा	73.22	58.65	66.36
9.	बरौनी	72.88	56.22	65.05
10.	वीरपुर	67.77	49.53	59.23
11.	बेगूसराय सदर	66.37	49.90	58.68
12.	नावकोठी	68.73	50.63	60.06
13.	बखरी	64.06	46.83	55.88
14.	डंडारी	66.10	48.06	57.56
15.	साहेबपुर कमाल	70.35	53.24	62.42
16	बलिया	71.01	54.80	63.49
17.	मटिहानी	72.29	56.51	64.93
18.	साम्हो अकहा कुरहा	59.58	44.97	52.66
	औसत	**69.94**	**52.68**	**61.81**

Sources : Distric Census Handbook – Part – A & B, Begusarai, 2011

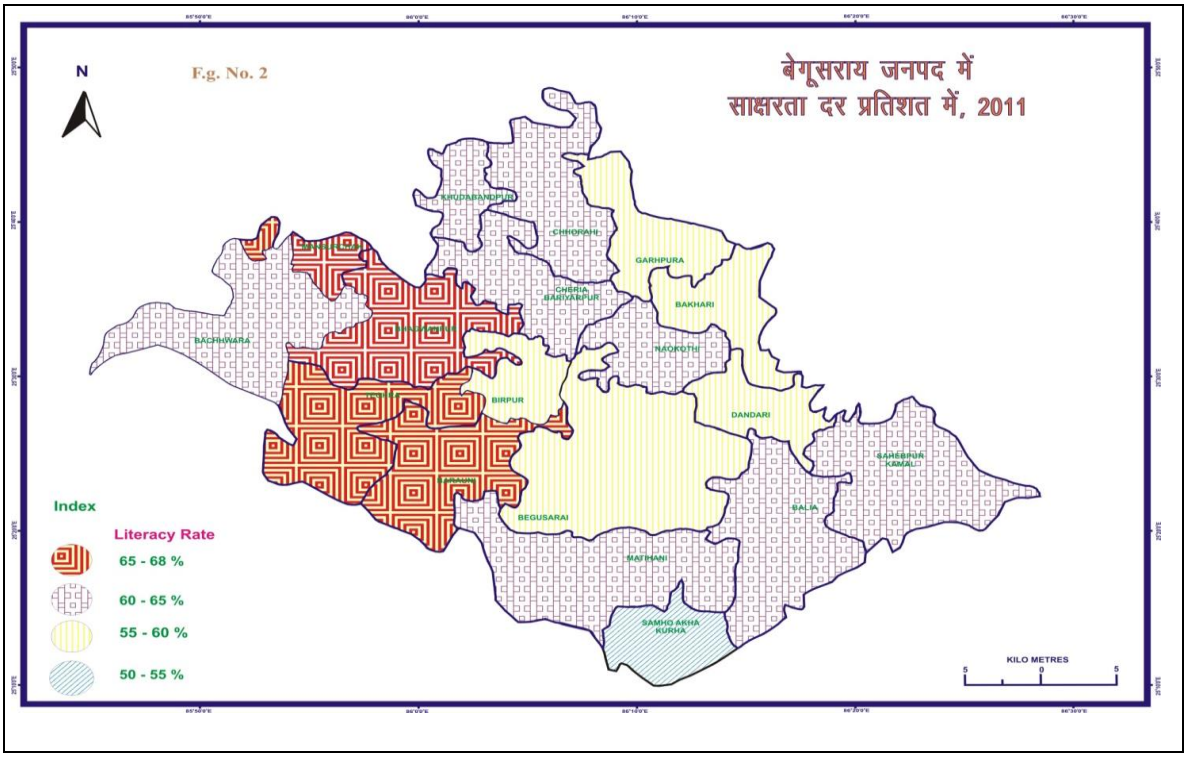

बेगूसराय जनपद में 2011 की जनगणना के अनुसार कुल साक्षरता दर 61.81 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता दर 69.94 तथा महिला साक्षरता दर 52.28 है। इसमें सवाधिक साक्षरता मंसूरचक प्रखण्ड का 67.90 प्रतिशत है जबकि सबसे निम्न साक्षरता दर साम्हो अकहा कुरहा प्रखण्ड का 52.66 प्रतिशत है। इस प्रखण्ड में साक्षरता का सबसे निम्न दर होने कारण जिले के मुख्य भाग से दक्षिण गंगा नदी के पार होने के कारण यहाँ शिक्षा के मूल साधनों का अभाव होना है। तालिका संख्या - 3 के आधार पर साक्षरता में असमानता को निम्न चार भागों में बाँटा जा सकता है:

(1) उच्च साक्षरता दर वाले प्रखंड (65-68%) :

इसके अन्तर्गत चार प्रखंड आते है जिसमें मंसूरचक (67.19%), तेघड़ा (66.36%), भगवानपुर (66.19%) एवं बरौनी (65.05%) है। इनमें बरौनी एवं तेघड़ा में उच्च साक्षरता का मुख्य कारण यहाँ की सुदृढ अर्थव्यवस्था, औद्योगिक केन्द्रों की उपस्थिति, यातायात एवं परिवहन की सुविधा का होना है। फलस्वरूप यहाँ के लोग शिक्षा के प्रति सजग, सक्षम और अग्रसर है। जबकि मंसूरचक और भगवानपुर में यातायात की सुविधा के साथ-साथ नौकरी पेशा वाले लोग अधिक है। इन प्रखंडों के लोग शिक्षा के प्रति ज्यादा सजग है, यह भी उच्च साक्षरता का एक कारक है।

(2) मध्यम साक्षरता वाले प्रखंड (60-65%) :

उसके अन्तर्गत आठ प्रखंड आते हैं, जिसमें मटिहानी (64.93%), छौड़ाही (63.70%), बलिया (63.49%), साहेबपुर कमाल (62.42%), खुदाबन्दपुर (62.16%), चेरिया बरियारपुर (61.52%), बछवाड़ा (60.47%) एवं नावकोठी (60.06%) है। ये प्रखंड मुख्यतः कृषिगत अर्थव्यवस्था से जुड़े है। बलिया में सामान्य स्तर पर नगरीकरण भी हुआ है, किन्तु यहाँ का बाजार ग्रामीण परिवेश से प्रभावित है। इन सारे प्रखंडों में सरकारी योजनाओं यथा साइकिल व छात्रावृत्ति योजनाओं का प्रभाव दिखता है। संचार एवं तकनीक का असर इन प्रखंडों पर भी पड़ा है। बावजूद इसके यहाँ की साक्षरता दर मध्यम है। क्योंकि उच्च आर्थिक सुदृढ़ीकरण के अभाव में इन प्रखंडों के लोगों का जीवन स्तर मध्यम है, जो साक्षरता दर को प्रभावित करता है।

(3) निम्न साक्षरता दर वाले प्रखंड (55-60%) :

इसके अन्तर्गत पाँच प्रखंड आते हैं, जिसमें वीरपुर (59.23%), बेगूसराय सदर प्रखण्ड (58.68%), डंडारी (57.56%), बखरी (55.88%) एवं गढ़पुरा (55.83%) प्रखण्ड आते है। इन प्रखण्डों में बेगूसरय सदर प्रखण्ड को छोड़कर बाकी सभी प्रखंड निम्न कृषिगत अर्थव्यवस्था वाले है। यहाँ खेतीहर एवं मजदूर वर्गों की अधिकता है। दलित एवं पिछड़े वर्गों की बहुलता है। स्त्रियाँ शिक्षा के प्रति कम सजग है। इसलिए यहाँ की साक्षरता दर निम्न है। यदि बेगूसराय सदर प्रखण्ड की बाते करें तो इस क्षेत्र में नगरीय क्षेत्र जिले में सबसे अधिक होने के कारण भी साक्षरता दर निम्न है इनका मुख्य कारण सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में लोग अभी भी शिक्षा के प्रति सजग नहीं है खासकर महिलाएँ खेतीहर मजदूरी करने वाले लोग एवं निम्न आय वाले लोग इत्यादि।

(4) अति निम्न साक्षरता वाले प्रखंड (50-55%) :

इसके अन्तर्गत एक प्रखंड साम्हो अकहा कुरहा (52.66%), आते है। जिले में साम्हों अकहा कुरहा एक मात्र ऐसा प्रखंड है जो पूर्णरूप से दियारा क्षेत्र के अन्तर्गत आता

है। यह प्रखण्ड जिले के मुख्य भाग से गंगा नदी द्वारा अलग होने के कारण यहाँ यातायात की सुविधा का अभाव है। यह पूरी तरह बाढ़ग्रस्त क्षेत्र है। अच्छी खेती होने के बावजूद यहाँ के लोगों का जीवन कठिनाइयों से भरा है। इसलिए इन प्रखंडों में साक्षरता दर अति निम्न है।

लिंगानुपात एवं साक्षरता में सह-संबंध :

सह - सबंध गुणांक किसी भी दो या दो अधिक चरों के बीच आपस में संबंध को प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध में स्पीयरमैन के रैंक सह-संबंध गुणांक के अधार पर सह संबंध का मान ज्ञात किया गया है।

तालिका – 4 लिंगानुपात एवं साक्षरता में सह-संबंध, 2011

प्रखंड	लिंगानुपात		साक्षरता		कोटि अन्तर	D^2
	X	कोटि	Y	कोटि	D	
खुदाबन्दपुर	919	4	62.16	9	+5	30-25
छौड़ाही	920	3	63.70	6	+3	30-25
गढ़पूरा	902	9	55.83	17	+8	64
चेरिया बरियापुर	913	5	61.52	10	+5	36
भगवानपुर	993	12	66.19	3	-9	56-25
मंसूरचक	931	1	67.19	1	0	12-25
बछवाड़ा	898	10	60.47	11	+1	6-25
तेघड़ा	894	11	66.36	2	-9	64
बरौनी	890	13	65.05	4	-9	132-25
वीरपुर	888	14	59.23	13	-1	0-25
बेगूसराय सदर	884	15	58.68	14	-1	110-25
नावकोठी	923	2	60.06	12	+10	72-25
बखरी	909	6	55.88	16	+10	81
डंडारी	906	7	57.56	15	+8	81
साहेबपुर कमाल	873	18	62.42	8	-10	81
बलिया	881	16	63.49	7	-9	121
मटिहानी	879	17	64.93	5	-12	100
साम्हो अकहा कुरहा	905	8	52.66	18	+10	D^2=1260.5
N=18					D=0	$\sum D^2 = 1058$

Sources : Distric Census Handbook Part-A & B, Begusarai, 2011

$$r = 1 - \frac{6\sum D^2}{N(N^2-1)}$$
$$= 1 - \frac{6X1058}{18(18^2-1)}$$
$$= 1 - \frac{6348}{18(324-1)}$$
$$= 1 - \frac{6348}{18X323}$$
$$= 1 - \frac{6348}{5814}$$
$$= 1 - 1.09$$
$$r = -0.09\ (Negative)$$

तालिका संख्या 4 के अधार पर स्पीयरमैन के रैंक सह-संबंध गुणांक के अनुसार गणना करने पर लिंगानुपात एवं साक्षरता के बीच सह-संबंध की गणना करने पर निम्न ऋणात्मक सह-संबंध प्राप्त होता है अर्थात् लिंगानुपात एवं साक्षरता एक दूसरे के विपरीत दिशा में संबंध रखते है। इस

प्रकार जिस क्षेत्र की साक्षरता अधिक है वहाँ लिंगानुपात कम है तथा जहाँ साक्षरता कम है वहाँ लिंगानुपात अधिक है।

निष्कर्षतः

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बेगूसराय जनपद में लिंगानुपात एवं साक्षरता दोनों न्यूनतम है। इसके साथ-साथ लिंगानुपात एवं साक्षरता में निन्म ऋणात्मक सह - संबंध है। अतः कह सकते है कि जहाँ शिक्षा लड़के एवं लड़कियों में भेद को कम करता है वहीं कहीं-न-कहीं शिक्षा लिंगानुपात में कमी का भी कारण बन रही है जिसका मुख्य कारण शिक्षित लोगों में अपने संतान के भविष्य की चिंता एंव छोटे परिवार की संकल्पना है। शिक्षित लोगों के साथ-साथ अन्य लोगों में भी यह देखा जाता है कि यदि पहला संतान लड़का होता है तो लोग दूसरी संतान की कामना नहीं करते है। इस संकल्पना के कारण भी वर्तमान समय में लिंगानुपात में कमी हो रही है। इसके अलावे यदि पहला संतान लड़की हुई तो लोग दूसरा संतान लड़का ही इच्छा रखते है। इसके अलावे यहाँ के लोगों में लड़के के प्रति अधिक इच्छा भी लिंगानुपात में कमी का कारण है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस जनपद में लोगों को लड़के एवं लड़की के प्रति अपनी विचारधारा को बदलना पड़ेगा जो एक संतुलित समाज के विकास के लिए अति आवश्यक है। इससे इस प्रदेश का भविष्य उज्ज्वल होगा।

संदर्भ सूचीः

1. चंदना, आर. सी.(2002), जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. दूबे, कमलाकान्त एवं सिंह महेन्द्र बहादूर (1994), जनसंख्या भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर एवं नई दिल्ली।
3. नेगी, बी.एस. (1995-96), जनसंख्या भूगोल, केदारनाथ रामनाथ, शिक्षा साहित्य प्रकाशक, मेरठ।
4. पंडा, बी.पी.(2007), जनसंख्या भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
5. यादव, हीरालाल (1993), जनसंख्या भूगोल, वसुधरा प्रकाशन, गोरखपुर
6. श्रीवास्तव एवं प्रसाद (2009), भूगोल की सांखिकीय विधियां, बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर
7. Distric Census Handbook, Begusarai, 1981
8. Distric Census Handbook, Begusarai, 1991
9. Distric Census Handbook, Begusarai, 2001
10. Distric Census Handbook – Part – A, Begusarai, 2011
11. Distric Census Handbook – Part – B, Begusarai, 2011